मुख्य परीक्षा

प्रश्न- गैर सरकारी संगठन से आप क्या समझते हैं? एक लोक कल्याणकारी राज्य में गैर सरकारी संगठन (NGO) की आवश्यकता क्यों है? भारत में इन्हें कौन-कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है? विश्लेषण करें।

(250 शब्द)

What do you understand by Non- governmental organisation? Why is there a need of non- governmental organisation in welfare state? What challenges are being faced by them in India? Explain.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

- भूमिका में गैर सरकारी संगठन (NGO) को बताएं।
- अगले पैरा में लोकल्याणकारी राज्य में गैर सरकारी संगठन की भूमिका को बताएं।
- फिर अगले पैरा में बताइये कि गैर सरकारी संगठनों को भारत में कौन-कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

गैर सरकारी संगठन (NGO) से तात्पर्य ऐसे संगठनों से है, जो सरकार के क्षेत्र से बाहर बिना किसी निजी लाभ के सार्वजनिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रत्यत्न करते हैं।

- ये सरकार या सरकारी एजेंसियों के अंग नहीं होते।
- ये सार्वजनिक उद्देश्यों की भावना से प्रेरित होकर कार्य करते हैं।

कल्याणकारी राज्य में एन.जी.ओ. की भूमिका:-

- राज्य व्यापक योजनाओं के निर्माण और उसके क्रियान्वयन के लिए कार्य करता है, परंतु एक समूह में व्यक्ति समुदाय की समस्याएँ पृथक होती हैं जिसे अलग से पहचानने और निवारण की आवश्यकता होती है, चूंकि राज्य ऐसा नहीं कर सकता इसलिए एन.जी.ओ. पूरक भूमिकाएँ निभाते हैं।
- राज्य की नीतियाँ एक व्यापक समूह और उपसमूहों को केन्द्र में रखकर बनायी जाती हैं, परन्तु भारत एक विजातीय समाज है जिसमें छोटे-छोटे समूह की समस्याएँ और आवश्यकताएँ हैं।
- राज्य की नीतियाँ और उसका कार्यान्वयन प्रक्रियात्मक अवधारणा है, जबकि कुछ ऐसे समूह या समुदाय हैं, जिन्हें त्वरित निवारण या उपचार की आवश्यकता होती है।
- एन.जी.ओ. राज्य एवं जनता के बीच सेतु का कार्य करते हैं, जो विभिन्न मुद्दों पर सरकार की नीतियों, विचारधाराओं और कमियों से जनता को अवगत कराते हैं।
- लोकतंत्र में जनता का शक्तिशाली स्वाबलंबी एवं स्वाभिमानी होना आवश्यक है, चाहे वो किसी भी वैध तरीके से हो।
- एन.जी.ओ. सतर्कता, दबाव समूह, जनजागरूकता जैसे- विषयों पर राज्य दवाब बनाने का कार्य करता है।

भारत में एन.जी.ओ. के समक्ष चुनौतियाँ:-

- दानकर्ता एवं लाभार्थियो के बीच विश्वास की भावना की कमी।
- भारत में दान संस्कृति का अभाव।
- सरकार द्वारा एन.जी.ओ. को संशय की दृष्टि से देखना।
- इस क्षेत्र में व्याप्त अनियमितता एवं भ्रष्टाचार।
- लाभार्थियों की संख्या का अत्यधिक होना।
- विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के मध्य समन्वय का अभाव।